सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का द्वितीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक महाशिवरात्रि विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'देश की रग-रग में व्याप्त - महादेव'** नामक लेख में भगवान शिव की व्यापकता, शिवलिंग की पूजा का महत्त्व तथा द्वादश ज्योतिर्लिंगों का विस्तृत वर्णन किया है। तत्पश्चात् डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित **'ब्रह्माण्ड में ओ३म् का स्वरूप'** लेख में ब्रह्माण्ड में ओ३म् के स्वरूप एवं ओ३म् शब्द की व्याख्या को प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् डॉ. दयाराम स्वामी द्वारा लिखित **'दादूपंथ : परम्परा और इतिहास'** नामक लेख दादू सम्प्रदाय की परम्परा एवं इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डाला है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा